

#### Submitted To:

Ayasha Siddika Ratri Senior lecturer at Gono University Department of Bangla

### Submitted by:

Naeem Hasan Class Roll-16 Exam Roll-1136 1<sup>st</sup> Year,1<sup>st</sup> Term Batch-29 Department of CSE Gono University

Course NO: CSE1108 Course Title: Bengali

## **Assignment**

नाम :- त्या : नल्य शयान 541AT: - 200 न्दिहन: साम् भाष्यिक ॥ -विक्रिमारा हार्बिए समिति साल्याय समिति। मंत्रवं क्रप्रविकार्षा अकृष्ठि अ मानुस्य - दुर्शियंड्र खिसका कार्षि " शक्त नाम यारिकी यार्थि हिम्हान्मकार "श्लान - स्वीन्यनाथ निष्ठा । जाय स्थाय जाला ्रिटार्विभी- " २८वंड आला न्हानकी डीयकार विक्रिक च्या । जिया वर्त वर्षा त्याक वर्षात्म वर्षात्म त्याक अध्या निमा अप्त कर्वन । न्यीप्रमाय उद्गिलार SOD FR CETT SIMPL ENDINE FRENT THAT I ममिष्ठ इसा अधिन अवली जान डेस्निम्मावाडा TER STATE समामि सिकां सिमितित क्षियेक पार्टित अस. अक्षिय महा भ अव सिविह यहाक विहार्ट ्लारे इल दिवहन । नमार मलाव म्ना जनि वर अण्डित । म्नायी द्याप्त जार-म्नारी स्मिसंव अव गरा हा आवीर देवा दिनदेवामा त्रिप निरंशव त्यहा।

अभ भवाद क्रिक व्याणाता कविटि। इक्स भवा भित्रक्ष अभेत अला प्रत्यात अधिक क्रिक्ष अभेत अला प्रत्यात क्रिक्ष क्रिक्ष क्रिक्ष प्रत्यात प्रत्यात क्रिक्ष क्रिक्ष अविवल्प क्रिया प्रांत क्रिक्ष क्रिक्ष अविवल्प क्रिया प्रांत क्रिक्ष न्यात्व प्रति लाच प्रांत क्रिक्ष न्यात्व प्रति लाच व्याणां क्रिक्ष न्यात्व प्रति लाच व्याणां क्रिक्ष न्यात्व प्रति लाच व्याणां क्रिक्ष न्यात्व प्रति क्रिक्ष व्याणां क्रिक्ष न्यात्व प्रति क्रिक्ष व्याणां क्रिक्ष न्यात्व व्याणां क्रिक्ष व्

म्नायीय वावा म्नायीय मवाव त्यावा त्यावा वावाव वाव वावाव वाव व

नाम :- द्या:- तेलेस द्याता र्वान :- ३ ८ अविश्वाद द्वान :- ३३७ ८

निर्म क्ष्म क्ष्मिक क्ष्मिक क्ष्मिक कार्य कार कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य

स्थान यह मा इकि। अभी खार भीमें याहि किये ज्याता नुष्क हिल प्रिकार कासल कासल मामेमक उपाद कासण कासल कासल मामेमक उपाद कासण कासल कासल आसीय हिराह मासाई की अर्काल आधि ज्यासीय क्रिया मानवांत्र र्मिमी प्रमित्त आधि अस्तीक अर्थिकार्प।

अस्तिक अर्थिकार्प।

अस्तिक अर्थिक किर्याणकार । अर्थिक कार्याणकार माला भिर्मिक कार्य कार्यापकार । अर्थिक कार्यापकार जाका अर्थिक कार्यापकार जाका अर्थिक कार्यापकार जाका अर्थिक कार्याणकार जाका अर्थिक कार्याणकार जाका अर्थिक कार्याणकार जाव अर्थिक कार्याणकार जाका अर्थिक कार्याणकार जाका अर्थिक कार्याणकार जाका अर्थिक कार्याणकार जाविक अर्थिक कार्याणकार जाविक जाविक

अवहर मार्म काम कारिकट्ट त्रावा प्रवासक काराव यक जेन्याल सिंति यह संभानिक वाव क्या म मार्म कार्य स्वास सिंति यह संभानिक वाव क्या म मार्म कार्य कार्यकारिक संभानिक वाव क्या म मार्म कार्य कार्यकारिक संभानिक वाव क्या म मार्म कार्य कार्यकारिक संभानिक वाव क्या म मार्म कार्यकारिक संभानिक वाव क्या म मार्म कार्यकारिक संभानिक वाव क्या म मार्म कार्यकारिक संभानिक वाव क्या मार्म कार्यकारिक संभानिक वाव क्या मार्म कार्यकारिक वाव क्या मार्म कार्यकारिक संभानिक वाव क्या मार्म कार्यकारिक कार्यकारिक संभानिक वाव क्या मार्म कार्यकारिक संभानिक कार्यकारिक संभानिक वाव क्या मार्म कार्यकारिक संभानिक संभानिक कार्यकारिक संभानिक कार्यकारिक संभानिक कार्यकारिक संभानिक संभानिक

### **Exam Answers**

नाय :- नार्धिय श्यान CAIM :- 26 अविभाग द्वाल :- 22 १५ OTSO अधिरेत - दुख्य :-कां, मा न्यका दियी अविष्ठ वहुमा नामात्म भागी न्मिग्री विश्व क्षित्रण क्षित्रण क्षित्रण ; व । राभव च्डाम माला हे हे या ने से माला . दिन्दल स्मारी माला हु या है अर्थ छात्र -काय- मिल कि मिल के प्राप्त । समान निक् अर्थित । र। -(मिप्पं काव ने में सम्मान काव ने मान विक्रम :- प्राप्ति, चिर्द्र, विश्व प्रधावादा चार्य स्टिश स्त्र । ७। व्यायात्र द्वास रिवडाहाद्यानस्य मा । (यसने :-केंग्रिक क्षिक क्षिया 8। त्यानरमरा अधिस यामान प योवडांत चित्र राव भा। (मसन :- कार्रान, देवान । @ । निर्मावा व्यापित क्षिति , में क्षित्र विश्व अभियत् - १५ । वर्षः - क्षिमस्य-मायान निर्वाहर निर्वाहर निर्वाहर

नाम : त्या : नार्ध यायान त्रवाधात ह्याल :- 920A

# 8 भः अखोर छत्र :-

"नेवाकित " - कविनाम चावनाम चावनाम क्यानिस मीया निर्म-स्मीयः जीवनित्र जाविकादी समुभित जाला -्यंग्रा क्याप्य - किया में मार क्यूवित अविदेश व्यक्ति मान विक्रिया विविधात व्यवनि साहित वास्ति का वा वा मिति में मिति अपिरिंग अपिरिंग अपिरिंग ्रक्याप्त अविष्य क्षेत्रायान क्षेत्रक अविष्य स्मारमाय व्ययका व्यव व्यवद्या आउता गर्म । स्थाकिक हर्नेस्यापिव नाकि। मोर्श्वित रावं रिप्तिका भ्यक्षिर सम्मुख ्रिंगत विश्व देश केरा काराव कारात कारात व्यापि अवा दिलालय हाम अहि । अविद्यु छीव त्य न्त्राद्यादि न्याद सहित्ता अम्पासम् यादिका । नार वास्ति अधि खिका देवार से कवानीय क्षिया । १६४६/१४ ड्रेंस खिल छक्। "अड्ढाकि आभाभीत यही कालासाभीत यथरा न्यारायंतियं सार्था व्याप्यानं असीक्षे अपितं न्ध्रियल निवंत्रीमं क्रिकारं कता क्वि वाववाव